इमाम हुसैन[अ०]

हिन्दू धर्म के दर्पण में

श्री पण्डित चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासू

हुसैन[अ०] को परखने के लिए हुसैनी आंख, हुसैनी दिल, और हुसैनी दिमाग़ चाहिए अर्थात् हुसैनी नेत्र, मन और मस्तिष्क चाहिए और यह सब मुझे नसीब नहीं (उपलब्ध नहीं)।

हां! लखनऊ के पुश्तैनी बाशिंदे (पीढ़ियों से लखनऊ में रहने वाले) के नातें दिल में हुसैन की मुहब्बत व इज़्ज़त प्रेम और सम्मान है। उसी जज़्बे या भाव में कुछ बोल देता हूं। और आप उसे पसन्द फ़रमाते हैं वरना सीरते हुसैनी यानी हुसैन[अ०] के जीवन चरित्र पर मेरा बात करना तो तुलसीदास के शब्दों में वैसा ही है जैसा कि ''चींटी का समुद्र की थाह लगाने चलने या मच्छर का आसमान नापने का साहस करना।''

हज़रत, महानुभावाओं! मेरे विचार मे हज़रत इमाम हुसैन दुनिया के उस श्रेणी के महान पुरूषों में से हैं जैसे कि भगवान गौतम बुद्ध और ईसा प्रभु मसीह। आप में से बहुतों को तअज्जुब (अचरज) होगा कि हिन्दू मुकर्रिर (हिन्दू वक्ता) हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की मुशाबिहत (मिलान) अपने राम और कृष्ण से न कर के 'बुद्ध ओर मसीह से कर रहा है। लेकिन मैंने इस लिए राम और कृष्ण का नाम जान बूझकर नहीं लिया कि राम और कृष्ण को हिन्दू साक्षात परमात्मा समझते हैं और जहां तक मुझे ज्ञान है न कभी इमाम हुसैन[अ०] ने स्वंय खुदा होने का दावा किया है और न मुसलमान ही उन्हें खुदा समझते है। खुदा क़ादिरे मुतलक़ (सर्वशक्तिमान) है। वह जो चाहे कर सकता है। वह तमाम कामों को केवल पलक के इशारे से कर देता है जो मानव शक्ति (इन्सानी कूवत) से बिल्कुल बाहर है अतः हिन्दू अक़ीदे के मुताबिक़ (हिन्दू विश्वानुसार) भागवान कृष्ण ने भी ऐसे बहुत से काम किए हैं जो इन्सानी ताक़त से (मानव शक्ति से) बाहर है। जैसे महाभारत में लिखा है कि उन्होंने जयद्रथ के रण भूमि से ग़ायब हो जाने पर दिन ही में सूरज गुरूब कर दिया था (अस्त कर दिया था) और फिर जयद्रथ के नमूदार यानी प्रकट हो जाने पर डूबे सूरज को उसके मारे जाने के लिए उसी दम रौशन भी कर दिया था। खुदा इन्सानों के लिए, ईश्वर मनुष्यों के लिए केवल सजदा करने मदहोसना करने, स्तुति और वंदना करने और पूजा किए जाने की चीज़ होता है। वो आबिदों और पूजा उपासना करने वालों पर रहम व बरकत की बारिश कर सकता है, दया और मांगलिकता की वर्षा कर सकता है। परन्तु वो मनुष्यों के लिए नमूना–ए–अमल अर्थात आदर्श (Ideal) नहीं हो सकता। लेकिन हज़रत इमाम हुसैन चूँकि मनुष्य थे इसलिए आप बनी नौअ़–ए–इन्सान (मानव जाति) के लिए नमून–ए–अमल थे (आदर्श थे) चूंकि आपने अपने

हर एक कार्य से इन्तेहाई इन्सानियत का इज़हार किया, सर्वोच्च मानवता का परिचय दिया, आपका हर एक काम इन्सानी जौहर का कमाल था, मानवीय तत्व की अन्तिम सीमा था, इसलिए आप मामूली इन्सानी (साधारण इन्सान) न थे, बल्कि इन्साने कामिल थे बल्कि एक पूण मनुष्य थे। और इन्सानियत के लिए नमून–ए–अमल थे। मानवता के लिए आदर्श थे। इस सभा में जो कि हमारे घर में हो रही है और जिसमें कि निमन्त्रित करने वाले सदस्यों में मैं एक अदना मेम्बर (तुच्छ सदस्य) हूं। मेरे लिए यह अवसर नहीं है कि मैं एक पूर्ण मनुष्य के विषय पर कोई लम्बा भाषण दूं। इस सभा में तो हम लोग बाहर से पधारे हुए अपने मेहमान उलमा (अतिथि विद्वानों) के भाषण सुनने के मुश्ताक़ हैं (ललायित हैं) मैं केवल प्रोग्राम के खाली समय को पूरा करने के लिए आपके सामने उपस्थिति हो गया हूं।

सज्जनों! हमारी मातृभूमि हिन्दुस्तान एक मज़हबी मुल्क है। (धार्मिक देश है) हिन्दुस्तान की रूह ने (आत्मा ने) ज़मान–ए–क़दीम (प्राचीन काल) से केवल धर्म पर विचार किया है और धर्म पर ही अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुबारक दिल में इस सरज़मीन के लिए (इस धरती के लिए) प्यार था आपने कर्बला की लड़ाई की शुरूआत में ही मुसलमानों का खून बहाने और यज़ीद वालों की तबाही अर्थात् विनाश से बचाने के उद्देश्य से जिन तीन शर्तों को यज़ीद के सामने पेश किया था उनमें से एक में हज़रत ने हिन्दुस्तान में पधारने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई थी (इच्छा व्यक्त की थी)। इसी हिन्दुस्तान में जहां उनकी शहादते अज़ीम (महान बलिदान) के तेरह सौ वर्ष बाद आज इस तारीख़ी (ऐतिहासिक) शानदार इमारत में आप उनकी बैनुल अक़वामी (यादगार सर्वजातीय) यादगार मना रहे हैं। मैं अपने भाषणें में मुतअद्दिद अनेकों बार यह बता चुका हूं कि हिन्दुस्तान में चार खास पज़ाहिब (विशेष धर्म) है जिनका कि अपना अपना ज़खीम (पृथक) लिटरेचर है। यहां का एक वह क़दीम तरीन (प्राचीन) धर्म है जो आर्य जाति के इस देश में आने से पहले यहां फैला हुआ था, और जो आजकल ''सन्त–मत'' के नाम से, पुकारा जाता है। गुरू गौरखनाथ, सन्त तुका राम, रामानन्द, कबीर, नानक सब इसी के पैरोकार हुए हैं। ओर इस समय आगरा का ''दयाल बाग'' अपटूडेट अखाड़ा माना जाता है। और दक्षिण में द्रविड़ के नाम से वहां की तमिल तेलगू आदि तेरह दक्षिणी भाषाओं में जिनका प्राचीन साहित्य भी मौजूद है और मोहन जोदड़ों और हड़प्पा की खोजबीन में जिसके कसीर अलामात बड़ी संख्या में (लक्षण) मिले हैं। दूसरा आर्यों का वैदिक धर्म है जो वेदों और संस्कृत साहित्य में मौजूद है जिसका अपटूडेट दावेदार दयानन्द सरस्वती का क़ायम किया हुआ आर्यसमाज है। जिसका साहित्य प्रकृति और संस्कृत भाषाओं में मौजूद है और चौथा बौद्ध धर्म है जिसका महावंश और जातक आदि महान साहित्य पाली भाषा में है जो तिब्बत, सीलोन, चीन, जापान, बर्मा और स्याम आदि देशों में इस समय भी शान के साथ रायज है (प्रचलित है)।

यह चारों हिन्दुस्तान के प्राचीन धर्म कर्मवाद यानी मस्ल–ए–तनासुख या आवागमन के मानने वाले हैं। इनमें ''जैन'' और ''बौद्ध दो ऐसे धर्म हैं जो खुदा की हस्ती से तो मुन्किर हैं ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हैं परन्तु इन्साने कामिल या पूर्ण पुरूष के पुजारी हैं। वर्तमान हिन्दू धर्म जिसके अन्तर्गत आज सब हिन्दू चल रहे हैं। इन चारों मज़ाहिबों का मजमूआ हैं (चारों मतों का संग्रह है) चूंकि सन्त मत के महानुभाव हमेशा से तारिक़े दुनिया और फोक़रा कर रहे हैं। और उसका मज़ाक यानी रूचि केवल रूहानियत या आध्यात्मक में रही है। इसलिए वह आध्यात्मिकता के मुतलाशियों में हमेशा सीना दर सीना अर्थात

खोजियों में सदैव एक से दूसरे तक चलता रहा है। वह दुनिया दारी की समान व्यवस्था से हमेशा किनारे रहा है। परन्तु चूंकि शेष तीनों धर्म हिन्दुस्तान के राजधर्म (शाही धर्म) रह चुके हैं इसलिए इन तीनों धर्मों के उसूलों को लेकर यहां एक आम मज़हब की साख्त हुई थी, सामान्य धर्म का निर्माण हुआ था। वही हिन्दुस्तान का सामान्य धर्म अब हिन्दु धर्म कहलाता है। जैन, बौद्ध और वैदिक इन तीनों धर्मों की एक–एक खुसूसियत यानी विशेषता है। वैदिक धर्म की विशेषता ''यज्ञ'' ''और हवन''। जैन धर्म की विशेषता ''तप'' अर्थात ''व्रत'' ''त्याग'' और ''तपस्या''। रोज़ा, जुहद् और रियाज़त और बौद्ध धर्म की विशषता है ''दान'' अर्थात ज़कात व ख़ैरात। वर्तमान हिन्दू धर्म में यह तीनों विशेषताएं हैं। हिन्दू धर्म की साख्त अर्थात आकृति के बारे में स्पष्ट कहा गया है।

त्रियों धर्म स्कन्धः यज्ञ स्तपो दान मिति

अर्थात यज्ञ, तप और दान यह धर्म के तीन बड़े खम्बे हैं जिन पर हिन्दू धर्म की इमारत खड़ी है। वर्तमान हिन्दू धर्म की कोई ऐसी रस्म नहीं है जिसमें अगियार यानी कूछ न कुछ आग में सुलगाया न जाता हो। यह यज्ञ है। कोई ऐसी रीति नहीं है जिसमें ब्राहम्ण को भोजन या ब्राहम्ण को सीधा न दिया जाता हो। यह दान है। यही कारण है कि जैनों और बौद्धों की तरह वर्तमान हिन्दू धर्म भी ''इन्साने कामिल'' अर्थात ''पूर्ण पुरूष'' या ''पर्फ़ेक्ट मैन'' के सिद्धान्त को मानता है।

यह एक अजीब मज़ा है कि जब मैं हिन्दुस्तान के इन चारों मुमताज़ यानी प्रतिष्ठित धर्मों के अन्दर पूर्ण पुरूष के जो सिफ़ात बयान किये गये हैं (जो गुण बताए गए हैं) उनके साथ हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुबारक यानी शुभ गुणों को मुन्तबक़ करता हूं (मिलाता हूं) तो मैं हिन्दुस्तान की मज़हबी रूह के नुक्त–ए–नज़र से धार्मिक आत्मा के दृष्टिकोण से आपको पूर्ण पुरूष पाता हूं। और मेरा दिल हुसैनी अक़ीदत व मुहब्बत हुसैन[अ०] के प्रति निष्ठा और प्रेम से भर जाता है। मैं ज्यों–ज्यों आपके पाक अवसाफ़ व सिफ़ात, आपके पवित्र सद्गुणों पर विचार करता हूं तो आप मुझे हिन्दुस्तान की धार्मिक आत्मा का एक रौशन मुजस्समा (दिव्य प्रतिमा) दिखते हैं। और मैं आपको अपने मज़हबी जज़्बात से एक लम्हे के लिए भी नज़र अन्दाज़ करने में क़ासिर हो जाता हूं, अपनी धार्मिक भावनाओं से एक क्षण के लिए भी आपकी उपेक्षा करने में असमर्थ रह जाता हूं यही कारण है कि मैं यादगारे हुसैनी के इन बैनुल अक़वामी जलसों को अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं को हिन्दुस्तान के क़ौमी इत्तिहाद के लिए राष्ट्रीय एकता के लिए अति शुभ समझता हूं। क्योंकि मुझे विश्वास है कि ज्यों–ज्यों हुसैनी सिफ़ात का मुतालआ और उन पर ग़ौरो खोज अर्थात हुसैन के गुणों का अध्ययन और उन पर चिंतन मनन किया जाएगा त्यों–त्यों हिन्दू मुसलमानों के मुन्तशिर जज़्बात एकजाई और मुतनफ्फ़िर मज़हबी रूह मानूस होती जाएगी, बिखरी हुई भावनाएँ एकत्रित और घृणित धार्मिक आत्मा एक दूसरे से हिल मिल जाएँगी। इसलिए मैं कहता हूं कि शुभ है वह दिमाग, वह मस्तिष्क जिनमें हुसैन[अ०] की सर्वजातीय यादगार की सूझ पैदा हुई।

सज्जनों यह विषय कुछ दार्शनिक है (फ़ल्सफ़ियाना है) क्योंकि क़दीम हिन्दुस्तान फ़ल्सफ़ियों का मस्कन था। प्राचीन भारत दार्शनिकों का गढ़ था। हिन्दुस्तान के दार्शनिकों ने मुत्तफ़क़ा तौर से सर्वमत से नजात, निर्वाण या मोक्ष को मनुष्य का इन्तिहाई हुसूल तस्लीम किया है। वरन उपलब्धि माना और यहां का हर धर्म अपने अलग–अलग तरीक़ों से यहां का प्रत्येक धर्म अपने अलग–अलग ढंग से मनुष्यों को नजात या मोक्ष पाने की तदबीर या युक्ति बताता है। चुनान्चे जैन धर्म जो अपनी तहज़ीब या सभ्यता

को वैदिक सभ्यता से भी पुरानी, वास्तविक और आधारभूत होने का दावा करता है, नजात पाने योग्य सम्पूर्ण पुरूष ''कामिल इन्सान'' के तीन गुण पेश करता है। उसका कथन है कि ''सम्यक दर्शन ज्ञान चरित्रयाणि साक्षात्मोक्ष मार्ग'' जिसका अर्थ है कि–

1. सम्यक दर्शन यानी सही नज़र Right Vision

2. सम्यक ज्ञान अर्थात सही इदराक व इल्म Right Knowledge

3. सम्यक चरित्रयाणि Right Character

इन तीन गुणों से सुशोभित मनुष्य ''मोक्ष'' प्राप्ति की योग्यता रखता है। आइये इस जैन सिद्धान्त को सामने रखकर ज़रा हुसैनी चरित्र का दर्शन कीजिए।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि हुसैन[अ०] को सही नज़र प्राप्त थी। यज़ीद को शाम व अरब के तमाम उलमा यानी धर्मशास्त्री मुसलमान समझ कर उसके हाथ पैर बैअत कर रहे थे और उनके मन मस्तिष्क पर जबकि यज़ीद छाया जा रहा था तब हुसैन[अ०] उसे मुसलमान नहीं बल्कि इन्सान कहलाने का भी अहल अथवा पात्र नहीं देख रहे थे। इसलिए कि आपको सही नज़र यानी सम्यक दर्शन (Right Vision) प्राप्त थी। हुसैन[अ०] जब कूफ़े वालों के बुलाने पर अपनी बीवी–बच्चों को बेसरो–सामान बिना किसी तैयारी के अपने साथ कूफ़े की ओर लेकर चलने को तैयार हुए तो हर समझदार व्यक्ति आपको रोकता था और आपकी ग़लती अथवा भूल बताता था परन्तु हुसैन[अ०] की अक़्ल और दृष्टि इसी को सही मार्ग समझ रही थी क्योंकि आपको सही ''इदराक'' सम्यक ज्ञान (Right Knowledge) प्राप्त था। हुसैन[अ०] के सही अखलाक़ सम्यक चरित्रयाणि का क्या कहना है किसी दुश्मन को भी कभी आपके अखलाक़ में (आपके आचार में) कोई रत्ती भर लग़ज़िश या फिसलन ढूंढे नहीं मिली। हालांकि उस समय के मोवर्रेख़ीन (इतिहासकार) सब मुख़ालिफ़ यानी विरोधी पार्टी के लोग थे। इसलिए जैन धर्म के दृष्टिकोण से हुसैन[अ०] अपनी जगह ''इन्साने कामिल'', ''पूर्ण पुरूष'' थे।

दूसरा बौद्ध धर्म है जिसने दुनिया के एक तिहाई मनुष्यों के हृदय को मग़लूब यानी परास्त कर रखा है। बौद्ध धर्म की रीढ़ आर्य स्टानिगक़ मार्ग है। भगवान गौतम बुद्ध ने चार असल व आलातरीन (चार मूल व उच्चतम) सच्चाइयों को देखा। और उनका अहसास व अमल उनका अनुभव और क्रिया क्या थी इन चारों में से चौथी सच्चाई पर जिसमें कि आठ गुण हैं खुद क़ादिर होकर उन्होंने इस काम को हासिल किया था यानी स्वयं सक्षम होकर इस पूर्णता को प्राप्त किया था जिससे कि वह निर्वाण में पँहुचे और बनी नौअ इन्सान अर्थात मानव जाति के लिए उन्होंने निर्वाण यानी ''नजाते कामिला'' के प्राप्त करने की एक शाही सड़क ढूंढ़ दी। गोतम बुद्ध की देखी हुई वे चारों सच्चाइयां यह हैंः–

1. दुःख Suffering यानी अज़ीयत क्या है।

2. दुःख समोदय Origin of Suffering यानी अज़ीयत की क्या बुनियाद है?

3. दुःख निरोध (Destrunction of Suffering) यानी अज़ीयत की तबाही व तख़रीब क्या है?

4. दुःख निरोध का उपाय (Noble Way of Destrunction of Suffering) यानी अज़ीयत की तख़रीब का सही रास्ता क्या है?

हम देखते हैं कि हुसैन[अ०] ने भी अपनी जगह पर चार मूल सच्चाइयों को देखा और उनका अहसास उनका अनुभव और जानकारी की थी। आपने देखा कि एक खुद्दारी व नफ़स परस्ती और शराब ख़्वारी यानी घमण्ड व स्वार्थ और मधु सेवन एवं लूट खसोट जिदाल व क़ेताल यानी मार काट और तबाही और बरबादी यानी

विनाश और क्षय, दुराचार और व्यभिचार, बीमारी और मौत ओर अन्त में दौज़ख अर्थात नर्क की आग मे जलना यह अज़ीयत या दुःख है। 2. एक ईश्वर की पाक यानी पवित्र ज़ात यानी हक़परस्ती और नेकी, सत्यवाद और उपकार पर ईमाने कामिल न लाकर पूर्ण विश्वास न लाकर हज़ारों वहमों में यानी भ्रान्तियों में फंसे रहना शिर्क, बुतपरस्ती अन्धी नफ़स परस्ती व नाआक़बत अन्देशी यानी अनेकेश्वरवाद मूर्ति पूजा अन्धी आत्मा पूजा परिणाम का न सोंचना यह दुःख का आधार है। 3. खुदा शिनासी अर्थात ईश्वर बोध ईश्वर को पहचानना यानी तौहीद और नेकी परहेज़गारी व नफ़स कुशी व आखिरत पसन्दी क़नाअ़त व इस्तिग़ना ऐकेश्वरवाद, उपकार, सदाचार आत्म त्याग निस्पृहता आलोक प्रियता संतोष और यतीमों व मिस्कीनों और मुसीबत ज़दों यानी अनाथों व दरिद्रों व दुःखी लोगों की सहायता करना यह अज़ीयत की तख़रीब या दुःख निरोध है। रसूल[स०] का बताया हुआ इस्लाम ही दुःख निरोध का सही रास्ता है।

भगवान गौतम बुद्ध ने दुःख निरोध का सही रास्ता जिस पर चलकर मनुष्य ''पूर्ण मनुष्य'' इन्साने कामिल (Perfect Man) हो जाता है अष्टागिक मार्ग यानी आठ गुणों का धनी होना महसूस किया था कैन आठ गुण?

1. सम्यक दृष्टि (Right Views) सही नज़रिया।

2. सम्यक संकल्प (Right Aspiration) सही आरज़ू या सही इरादे।

3. सम्यक वाचा (Right Speech) सही अख़लाक़ या सही कलाम यानी हक़ गोई।

4. सम्यक कर्मान्त (Right Conduct) सही अख़लाक़ या सही अफ़आल।

5. सम्यक आजीव (Right Livelihood) सही रोज़गार या सही मईशत।

6. सम्यक व्यायाम (Right Effort) सही वरज़िश या सही जोहद या सही कोशिश।

7. सम्यक स्मृति (Right Memory) सही हाफ़िज़ा यानी सही याददाश्त।

8. सम्यक समाधि (Right Contemplation) सही तसव्वुर या सही मुराक़बा।

जब हम महात्मा बुद्ध के बताए हुए इन आठों गुणों को हज़रत इमाम हुसैन में ढूंढते हैं तो हमें यह आठों गुण आपके चरित्र में प्रत्यक्ष रूप से मिलते हैं। उदाहरणार्थः—

1. हुसैन[अ०] में सम्यक दृष्टि यानी सही नज़र थी। यह मैं पहले निवेदन कर चुका हूं (अर्ज़ कर चुका हूं) कि आपने जो कुछ देखा सही देखा जो वस्तु अन्दर बाहर से जैसी थी उसको वैसा ही देखा।

2. हुसैन[अ०] में सम्यक संकलप यानी सही इरादा था। इसे भी मैं निवेदन कर चुका हूं। आपने अपनी जिन्दगी में जो भी अपने जीवन में निश्चय किया और जिस बात की आरज़ू की (इच्छा की)। आपका वह निश्चय (वह इच्छा) सही थी।

3. हुसैन[अ०] में सम्यक वाचा यानी सही कलाम था। आप जो बोले सही बोले जिस मौक़े पर जिससे जो कहना ठीक और सही था वही और उतना ही आपने फ़रमाया। कहीं पर एक नुक्ता या एक बिन्दी भी कम या ज़्यादा या ग़लत नहीं फ़रमाया।

4. हुसैन[अ०] में सम्यक कर्मान्त यानी सही अख़लाक़ था। इसे भी मैं पहले निवेदन कर चुका हूँ कि दुश्मन को भी आपके अखलाक़ में (आपके व्यवहार में) कभी कोई ग़लती ढूंढे नहीं मिली।

5. हुसैन[अ०] में यह सम्यक आजीव यानी सही रोज़गार था। आपने गलत ढंग से रोज़ी नहीं कमायी बल्कि आपके वालिदे माजिद आपके पिता हज़रत अली[अ०] ने तो बैतुलमाल यानी सरकारी कोष का मालिक होते हुए भी मज़दूरी करके यानी यहूदी के बाग में पानी सींच कर अपना

गुज़र बसर किया। वह बैतुलमाल को रिआया की दौलत (प्रजा का धन) समझकर उसे प्रजा की बहबूदी (प्रजा की भलाई) में ही खर्च करते रहे और हुसैन[अ०] की वालिदा यानी माता हज़रत फ़ातिमा[स०] चक्की पीसकर घरदारी की सेवा अपने हाथ से करके बसर करती थीं और खुली बात है कि बच्चा मां–बाप का निर्माण होता है।

6. हुसैन[अ०] मे सम्यक व्यायाम यानी सही वरज़िश या सही कोशिश थी। आपका कोई प्रयत्न कभी ग़लत नहीं हुआ। आप हमेशा शारीरिक एवं अध्यात्मिक दोनों कसरतें सही करते थे। एक तरफ़ जहाँ आप अध्यात्मिक (रूहानियत) में अदभुत थे वहां जिस्मानी बहादुरी और शारीरिक वीरता में अद्वितीय थे। आपने तीन दिन की प्यास और टूटे हुए मन की हालत में भी अकेले कर्बला में हज़ारों सिपाहियों के साथ अदभुत रूप से युद्ध किया। सम्यक व्यायाम यानी (Right Effort) का दूसरा अर्थ सही कोशिश या सही जोहद अर्थात सही प्रयास और सही संघर्ष भी हैं सही जेहद क्या है? यही कि अपने जान व माल से गरीबों, यतीमों की मदद करना सहायता करना। इबादत यानी नमाज़ रोज़ा के द्वारा दिल को पाक करना (हृदय को पवित्र करना)। नफ़स व गुस्से को जीतना (काम व क्रोध को जीतना) गुमराहों को नसीहत व नेक अखलाक़ के ज़रिये सच्चे दीन पर लाना।

7. हुसैन[अ०] में सम्यक स्मृति यानी सही हाफ़िज़ा या सही याद्दाश्त थी। आप कभी कोई बात, कोई वादा, कोई फ़रीज़ा, कोई वचन, कोई कर्त्तव्य कभी भूले नहीं। आप एक लम्हे के लिए (एक क्षण के लिए) कभी यह नहीं भूले कि आप ईश्वर के पास से आए हैं और अन्त में ईश्वर के पास जाना और तमाम उम्र के आजीवन के कामों का हिसाब देना है। आप हज़रत पैग़म्बर के नाती उनकी पाक गोद (पवित्र गोद) में खेले हैं हज़रत पैग़म्बर ने प्यार से आपके होंठ चूमे हैं और इस प्यार ही प्यार में आपने हज़रत पैग़म्बर को उम्मत (पैग़म्बर का पंथ) बचाने का वादा किया था (वचन दिया था) और आपके ऊपर इस्लाम के उसूलों अर्थात सिद्धान्तों की इन्तिहाई और सम्पूर्ण पाबन्दी की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। इसलिए नहीं भूले कि आप की याददाश्त दुरूस्त और स्मरण शक्ति ठीक थी। और सही हाफ़िज़ा (Right Memory) इन्सान–ए–कामिल की एक सिफ़त है। ''पूर्ण पुरूष'' का गुण हैं

8. हुसैन[अ०] में सम्यक समाधि यानी सही कल्पना एवं चिन्तन था। अपने माबूद या उपासक की याद न आप अपने नाना की मुबारक गोद में भूले न कर्बला की लड़ाई में नौ सौ घाव खाने के बाद, दुष्ट शिम्र की छुरी के नीचे। क्योंकि आप अपने ईश्वर से एक क्षण भी अलग नहीं हो सकते थे। यह आपके सही मुराकबे (शुद्ध ध्यान) की ज़िन्दा मिसाल है। मेरे विचार से कोई भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि हुसैन[अ०] इन आठों गुणों से मुनव्वर और सुशोभित नहीं थे जो बौद्ध धर्म की दृष्टि से पूर्ण पुरूष में होना लाज़िमी या अनिवार्य है।

जिस तरह से जैन धर्म और बौद्ध धर्म के विचार से हुसैन[अ०] पूर्ण पुरूष हैं उसी तरह आप हिन्दू विचार से भी पूर्ण और कामिल दिखते हैं। वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे ज़्यादा मुस्तनद (प्रमाणित) पुस्तक श्रीमद् भगवत गीता है। गीता भगवान कृष्ण का पवित्र वाक्य है। गीता में चार खास योग बयान हुए माने जाते हैं यानी 1. कर्मयोग, 2. ज्ञानयोग, 3. ध्यानयोंग या राजयोग, 4. भक्तियोग। हुसैन[अ०] में यह चारों योग हम उजागर पाते हैं कर्मयोग की तारीफ़ यानी व्याख्या में कहा गया है कि जो बिना किसी शख्सी बहबूदी की ख्वाहिश के अर्थात आत्मा कल्याण की इच्छा के मात्र धर्म या फ़र्ज़ की अदाई के लिए हर काम करता है वही कर्मयोगी है। साफ़ ज़ाहिर है कि हुसैन[अ०] का कोई काम आत्महित या अपने आराम के लिए नहीं हुआ। आपने जो

कुछ किया केवल धर्म के लिए दीन दुनिया की भलाई और बेहबूदी के लिए किया। यहां तक धर्म पर आपने अपने आपको कुरबान कर दिया (बलि चढ़ा दिया) इसलिए आप गीता के दृष्टिकोण से यानी गीता के नज़रिये के मुताबिक़ सच्चे कर्मयोगी थे।

आप ज्ञानयोगी भी थे क्योंकि आप परलोक और मृत्योपरान्त के जीवन को ही असली ज़िन्दगी समझते थे वास्तविक जीवन मानते थे। आप गीता की उस बात को भली भांति समझे हुए थे।

मतः परतर मान्यत् किंचिद स्ति धनेंजयः।

यानी एक परमेश्वर की पवित्र हस्ती के सिवा बाक़ी और सब बातिल है (असत्य है)। आप सच्चे हक़ शिनास यानी ईश्वर दर्शी थे।

हुसैन[अ०] ध्यान योगी या राज योगी भी थे। क्योंकि आप हर समय अपने ईश्वर से सम्पर्क रखते थे। किसी समय एक लम्हा (एक क्षण) भी उससे अलग न होते थे। यही गीता के राजयोग का निचोड़ है कि मनुष्य को पूर्ण युक्त अर्थात अन्तर्आत्मा से अपने पालनहार में पूर्ण रूप से मश्गूल यानी व्यस्त होना चाहिए। हुसैन[अ०] भक्तियोगी या पूर्ण भक्त थे। अपने ईश्वर या अल्लाह की मर्ज़ी अथवा इच्छा के लिए ही अपना सब कुछ तसद्दुक़ यानी न्यौछावर और कुरबान कर दिया था ईश्वर की उपासना के लिए आपने विशेष रूप से शुत्रु से एक रात की मोहलत मांगी थी और नवीं मोहर्रम की पूरी रात जो कि आपके जीवन की अन्तिम रात थी आपने केवल उपासना में व्यतीत की।

इन चारों योगों के अलावा भगवान कृष्ण ने गीता में अपने अत्यंत प्रिय व सिद्ध भक्त के गुण भी बयान फ़रमाए हैं। यह गुण गीता के बारहवें अध्याय यानी बारहवें बाब में बयान हुए हैं। तीन श्लोक प्रस्तुत करता हूँ:—

अद्वेष्टा सर्व भूताना मेत्रः करूणा एवच।
निर्ममों निरहंकारः सम दुख सेखः क्षमी।। 13
सन्तुष्टः सतंत योगी यतात्मा दृढ़ निश्चय।
मय्यर्पित म्रनो बुद्धिःयो में भक्तः क्षुमेजियः।। 14
यस्मान श्रेदि जते लोको लोकात्रो द्विजते चायः।
हर्षां मर्ष भयो द्वेगे मुर्क्तः यः सच म्रे प्रियः।। 15

(गीता अध्याय 12)

इन श्लोकों में भगवान फ़रमाते हैं कि जो किसी से बुग़्ज़ व कीना यानी बैर ओर कपट नहीं रखता जो सबका मित्र और साथी है जो सब पर दया करता है, जो ममता मोह से खाली है जिसमें घमण्ड और अहं नहीं है जो दुख और सुख में सदैव एक समान रहता है जो क्षमा करने वाला है जो हर दशा में सब्र व शुक्र करता है यानी धैर्य से काम लेता है और ईश्वर का धन्यवाद करता रहता है जो योगी यानी हक़ अथवा सत्य में पूर्णतयः व्यस्त रहता है मसरूफ़ रहता है जिसने अपने मन यानी अपने को जीत लिया है जो श्रद्धा का पक्का है जिसने अपने दिल व दिमाग़ को ईश्वर के हवाले कर दिया है अर्थात जिसने अपना मन मस्तिष्क ईश्वर को समर्पित कर दिया है जो न स्वंय किसी से मुज़तरिब यानी व्याकुल होता है और न जिस से कोई दूसरा व्याकुल होता है और जो खुशी गुस्सा और ख़ौफ़ (प्रसन्नता, क्रोध और भय) के ग़ल्बों से यानी वर्चस्व से कभी परास्त नहीं होता ऐसा पूर्ण भक्त मुझे सबसे प्यारा है भगवान के प्रियतम पूर्ण भक्त के यह चौदह गुण जब हम हुसैन[अ०] के उच्चतम व्यक्तित्व में पता लगाते हैं तो हम आपको हर गुण से प्रकाशमय और पूर्ण पाते हैं।

इस प्रकार हुसैन[अ०] को जब हम हिन्दुस्तान के धार्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं तो आपमें उन तमाम गुणों को नुमायाँ यानी प्रत्यक्ष रूप से पाते हैं जिनके होने से मनुष्य पूर्ण पुरूष या पुरूषोत्तम हो जाता है हिन्दुस्तान के 'योग दर्शन' और महाभारत के 'नारायणी धर्म' में इस बात पर काफ़ी तर्क प्रस्तुत किया गया है कि नर ही नर है यानी मनुष्य ही योग की विभूतियां व पूर्णता प्राप्त करके नारायण हो जाता है और वेदान्त भी

इस उसूल की तसदीक़ (इस सिद्धान्त की पुष्टि) करता है। मैंने जब मुसलमान उलमा यानी पण्डितों से पूछा कि क्या इस्लाम में भी इन्साने कामिल पूर्ण पुरूष के लिए कोई सिफ़ाती मेयार कोई गुणात्मक कसौटी बनाई गई है तो उत्तर मिला हां, पूछा कौन सा गुण जवाब मिला केवल एक पूछा कौन सा एक जवाब मिला, 'मासूमियत' त्रुटिरहित होना, अहा! मासूम यानी निष्पाप होना क्या जामे और पुर–मानी सिफ़त कितना सम्पूर्ण अर्थ सम्पन्न गुण है। इन्सानी हरकात मानव कर्म के केवल तीन वसीले यानी माध्यम हैं।

1. एक ख़्याल यानी विचार, 2. क़ौल यानी कथन 3. फेल यानी कर्म। मनुष्य कुछ सोचता है यह विचार है, मनुष्य कुछ बोलता है यह कथन है, मनुष्य करता है यह कर्म है। अतः मासूम–ए–कामिल यानी पूर्णतः निष्पाप भी तीनों तरह से मासूम ख़याल है, निष्पाप विचार है तो कभी गलत कल्पना न होगी, निष्पाप कथन है तो कभी ग़लत बात न कहेगा निष्पाप कर्म है तो कभी ग़लत काम न करेगा।

इस्लामी दृष्टिकोण से मनुष्य निष्पाप पैदा होता है। परन्तु सांसारिक भोग विलास आदि असुरी बर्चस्व से प्राप्त हो के मासूम या निष्पाप नहीं रहने पाता। हिन्दू दार्शनिकों ने भी आत्मा को 'नित्य शुद्ध–बुद्ध मुक्त स्वभाव' बताया है अर्थात आत्मा स्वभावतः अनश्वर पवित्र ज्ञान और मोक्ष प्रिय हैं।

आप देखें कि शुद्ध यानी पवित्र और शब्द मासूम एक ही माने रखते हैं, परन्तु हिन्दुस्तानी व इस्लामी दुष्टिकोण में थोड़ा सा अन्तर भी है और वह है कर्म वाद, यानी 'मसअल–ए–तनासुख़' आवागमन का प्रश्न। हिन्दुस्तान के दार्शनिक जीवन का प्रारम्भ अपने इस वर्तमान शरीर से ही नहीं समझते हैं। वह कहते हैं कि हम अत्यन्त प्राचीन काल से शरीर बदलते हुए अपने वर्तमान शरीर में मौजूद हैं। जस तरह मनुष्य फटे पुराने कपड़े पहन लेता है उसी तरह वह पुराने और अपूर्ण शरीरों को भी बदल कर नये शरीरों में चला आता है और नये शरीरों में आने के साथ ही अपने पिछले जन्म के संस्कार या विशेषताएं भी अपने साथ लिए आता है, नस्ले इन्सान यानी मानव वंश में स्वभाव की विभिन्नता का यही विशेष कारण है। स्वभाव पुरानी आत्मा के साथ उसी तरह रहते है जिस तरह बरगद के नन्हें से पोस्ते के बराबर बीज में विशाल बरगद का पेड़ छिपा होता है। इसलिए इन पुरानी विशेषताओं को नष्ट करके आत्मा की वास्तविक और स्वाभाविक विशेषता 'विशुद्धि' यानी मासूमियत को शरीर पर विजयी बना देना, मुक्ति का माध्यम अर्थात नजात का बाइस है। इसलिए यह सब सिफ़ाती मेयार यानी गुणात्मक मापदण्ड स्थापित हुए और उन्हें मार्ग या रास्ता कहा गया है। और उन्हें पार करने वाले मनुष्य को इन्साने कामिल अर्थात पूर्ण मानव बताया गया है।

इन सब की चर्चा से मेरा उद्‌देश्य केवल यह है कि जब हम हिन्दुस्तान के धार्मिक दृष्टिकोण से हुसैन[अ०] के पुनीत व्यक्तित्व (मुबारक शख़्सियत) को गहराई से देखते हैं तो हर पहलू से आपको पूर्ण और कामिल पाते हैं और हम कह उठते हैं कि हुसैन[अ०] एक अनमोल हीरा हैं जिसे जिस पहलू से देखो बेऐब और बहुमूल्य है। हुसैन[अ०] वह सुदृश्य गुलाब हैं जिसकी हर पंखुड़ी अपनी सुन्दरता और सुगन्ध से खूबसूरती और खुश्बू से दिल को खींच लेती है। हुसैन[अ०] ऐसा खरा सोना है जिसे ज्यों–ज्यों तपाओ त्यों–त्यों उसका रंग निखरता जाता है। हुसैन[अ०] वह चमकता हुआ सूरज है जिसमें सभी रंग मौजूद हैं। और कर्बला की घटना एक ऐसा अलबम है जिसमें दुनिया की सभी व्यक्तिगत, परिवारिक और सामाजिक जीवन में उठने वाले प्रत्येक सवाल के सुलझावे की तस्वीर है। इसमें बाप बेटा, भाई बहन, पति पत्नी, यार दोस्त, रिश्तेदार नातेदार सबके फराएज़ और

सबके कर्त्तव्यों की हद बन्दी, सीमा रेखा का व्यावहारिक नमूना मौजूद है। इसमें धार्मिक और सांसारिक ज़िन्दगी का भी भरपूर नमूना व्यवहारिक उदाहरण मौजूद है। इसमें राजनैतिक समस्याओं और संघर्ष का भी स्पष्ट हल मौजूद है। अगर ध्यान से देखा जाए तो दीन दुनिया का कोई ऐसा सवाल नहीं है जिसे हज़रत इमाम हुसैन[अ0] ने अपने कारनामे से हल न कर दिया हो। हुसैन का कोई काम अधूरा नहीं है। हर काम पूरा है(कामिल है)। कामिल इन्सान पूर्ण पुरूष का काम कामिल और पूर्ण होता ही है।

वास्तविकता तो यह है कि कर्बला का युद्ध मुसलमानों का घरेलू झगड़ा नहीं है बल्कि मानव जाति के दो खास समुदायों की लड़ाई है। यह कहा भी जाता है कि हुसैन[अ0] के बहत्तर आदमियों की छोटी सी सेना में दुनिया के सभी ख़ास ख़ास नस्लों के लोग मौजूद थे। अगर हुसैनी सेना में प्रत्येक नस्ल के लोग थे तो यज़ीद की पल्टन में भी रहे होंगे। अगर यह सत्य भी है तो कर्बला की लड़ाई को मात्र मुसलमानों का गृह युद्ध नहीं कहा जा सकता। हुसैन[अ0] ने यज़ीद के सामने सच्चे मुसलमानों को प्रस्तुत करके उसे चुनौती दी कि ऐ यज़ीद! क्या तू सचमुच मुसलमान है? और घमण्डी और अंधे यज़ीद ने आपका पानी बन्द करके और अत्यन्त कष्ट देके अत्यन्त अत्याचार के साथ सच्चे मुसलमानों की हत्या करके यह सिद्ध कर दिया कि वह मुसलमान नहीं है। क्योंकि एक सच्चा मुसलमान दूसरे मुसलमान के साथ ऐसा अत्याचार नहीं कर सकता। फिर हुसैन[अ0] ने एक मृत्य प्रायः जांबलब, दूधमुंहे बच्चे को पेश करके यज़ीदियों से पानी की मांग की। और वह दूध व पानी से वंचित प्यासा बच्चा, तड़पता बच्चा, बेहद निर्दयता से अपने बाप की गोद में तीर का निशाना बना दिया गया। इस बात ने यह सिद्ध कर दिया कि यज़ीदी मनुष्य भी नहीं थे बल्कि मानवता से बाहर साक्षात पशु और पिशाक्ष थे। दूसरी तरफ़ हुसैन[अ0] ने अपना पानी उसी अत्याचारी सेना को यहां तक कि उनके ऊंटों और घोड़ों को भी पिला के अपने इन्सानी जौहर और मानवीय तत्व का कमाल और प्राकष्ठा दिखा चुके थे। यह सब बातें इस बात का प्रमाण हैं कि कर्बला की लड़ाई सत्य और असत्य की लड़ाई थी। पुण्य और पाप की लड़ाई थी। एक तरफ़ नेकी, ईमानदारी, तपस्या, दया, सत्यबोध और ईश्वरीय भक्ति है। दूसरी ओर बदी, धोखाधड़ी, वासना पूजा, अत्याचार अधियारा, आत्म पूजा अर्थात मदिरा पान और दुराचार और सभी असुरी विशेषताएं हैं। दोनों शक्तियों का संघर्ष है। उपरी तौर से यह लगता है कि बदी की जीत हुई। लेकिन नतीजा यह होता है कि यज़ीद का हमेशा के लिए विनाश हो जाता है। और हुसैन[अ0] सदैव के लिए ज़िन्दा यानी अमर हो जाते हैं।

●●●

दीन की तक़्दीर

नदल हिन्दी

शाह की हमशीर है बिन्ते अली
दीन की तक़दीर है बिन्ते अली
अज़्मो जुरअत में सदाक़त है गवाह
हू–ब–हू शब्बीर है बिन्ते अली

●●●

ज़ैनब का बयाँ हू–ब–हू तक़रीरे अली है
ज़हरा की है तफ़सीर तो तनवीरे अली है
लो ज़ुल्म के ख़ैमों से धुआँ उठने लगा है
ये खुत्ब–ए–ज़ैनब है कि शमशीरे अली है

●●●